ओ३म्
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 जनवरी 2021
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२१
युगाब्द-५१२१, अंक-१३४, वर्ष-१३
पौष विक्रमी २०७७ (जनवरी 2021)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा मा नः प्रिया भोजनानि प्र मोषीः। आण्डा मा नो मघवञ्छक्र निर्भेन्मा नः पात्रा भेत्सहजानुषाणि ॥ –ऋ० १। ७। १९। ३

व्याख्यान– हे (इन्द्र) परमैश्वर्ययुक्तेश्वर ! (मा नो वधीः) हमारा वध मत कर। अर्थात् अपने से अलग हमको मत गिरावै। (मा परा दाः) हमसे अलग आप कभी मत हो। (मा नः प्रिया भोजनानि प्रमोषीः) हमारे प्रिय भोगों को मत चोर और मत चोरवावै। (आण्डा मा नः) हमारे गर्भों का विदारण मत कर। हे (मघवन्) सर्वशक्तिमन्! (शक्र) समर्थ! हमारे पुत्रों का विदारण मत कर। (मा नः पात्रा) हमारे भोजनाद्यर्थ सुवर्णादि पात्रों को हम से अलग मत कर। [सहजानुषाणि] जो-जो हमारे सहज अनुषक्त (स्वभाव से अनुकूल) मित्र हैं, उनको आप नष्ट मत करो। अर्थात् कृपा करके पूर्वोक्त सब पदार्थों की यथावत् रक्षा करो ॥

सम्पादकीय

किसान और राजनीति

हम सभी जानते ही है कि मानवीय जीवन के लिए सबसे बहुमूल्य 'वायु' है, द्वितीय स्थान पर 'जल' है एवं तृतीय स्थान पर है 'अन्न'। वायु वर्त्तमान तक नैसर्गिक रूप से उपलब्ध है, जल का उत्पादन भी नैसर्गिक है, किन्तु मनुष्य ने इस पर कुछ नियन्त्रित करने के उपक्रम अवश्य किए हैं। तृतीय क्रम पर अन्न की स्थिति ऐसी है कि इसके उत्पादन में प्रकृति की अपनी महत्ता होते हुए भी मानवीय परिश्रम-पुरुषार्थ की अनिवार्य आवश्यकता सृष्टि के प्रारम्भ से ही बनी हुई है, जिसके लिए संसार भर के कल्याणार्थ प्राप्त ज्ञानराशि अर्थात् वेदों-शास्त्रों में अनेक निर्देश उपलब्ध हैं- अन्नं ब्रह्मेतिव्यजनात् अन्नद्धेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते....., कृषि मित्कृषस्व विते रमस्व ..... आदि..।

इसी अन्न उत्पादक मानव को हम सभी कृषक अर्थात् किसान कहते हैं। इस अन्न के महत्त्व को ऐतिहासिक घटनाओं से सब जानते ही हैं कि जब कभी दुर्भाग्यवशात् किसी क्षेत्र या देश ने अकाल का सामना किया तब उसकी कैसी बीभत्स और भयानक परिस्थिति सामने आयी कि- मनुष्य ने अपनी भूख मिटाने के लिए पशु-पक्षी खाए, फिर अपने ही पालतु पशु खाए और जब इससे भी भूख न मिटी तब मनुष्य ने मनुष्य खाए। यूं तो संसार में सभी कार्यों की अपनी-अपनी महत्ता है किन्तु भोजन के लिए अन्न और अन्न उत्पादन के लिये 'किसान' का महत्त्व सदा से रहा है और सदा रहेगा। इसी महत्त्व को समझा था हमारे पूर्व महनीय प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने और तभी उन्होंने देश को एक जयघोष दिया- 'जय जवान-जय किसान' यह उद्घोष हमें बताता है कि किसान की जय के बिना न व्यक्ति की उन्नति होती है न परिवार, न समाज और न राष्ट्र की उन्नति होती है इसलिए यह उदघोष जितना महत्त्वशाली तब था, उतना ही महत्त्वशाली आज भी है। किन्तु हम सभी देख रहे हैं कि बाजारवादी शोषण मूलक अर्थव्यवस्था के मायावी जाल के मायावी मोह में फंसी हुई सरकारों ने कैसे इस किसान वर्ग के साथ अपने सत्ता के अंहकार में चूर होकर छल-कपटपूर्ण रीति से व्यवहार किए हैं, वर्त्तमान में भी हम सभी इस बीभत्सता को अनुभव कर रहे हैं। हम बाल्यकाल से सुनते आ रहे है और हमारे शास्त्रों में भी है, कि राजा प्रजा के लिए पिता समान पालन-पोषण करने वाला होता है, प्रजा के सुख में राजा सुखी तथा प्रजा के दु:ख में राजा भी दु:खी होता है, वर्त्तमान के राजा भी बार-बार जिस मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का नाम यदा-कदा जपते हैं, उन राजाराम जी को ''प्रजावत्सल'' जैसे विशेषणों से जाना और बताया जाता है किन्तु क्या होता है 'प्रजावात्सल्य'? ऐतरेय ब्राह्मण को उद्धृत करते हुए

शेष अगले पृष्ठ पर ....

पिछले पृष्ठ का शेष .... ऋषिवर दयानन्द ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में लिखते हैं कि- ''वही हमारा सम्राट अर्थात् चक्रवर्ती राजा और वही हमको भी चक्रवर्ती राज्य देनेवाला है, जो पिता के सदृश सब प्रकार से हमारा पालन करने वाला स्वराष्ट् अर्थात् स्वयं प्रकाशस्वरूप और प्रकाशरूप राज्य का देनेवाला है''।

किन्तु यहाँ विपरीत ही दिखाई दे रहा है, राष्ट्रीय राजधानी के चारों ओर देश का अन्नदाता किसान पिछले 47 दिनों से सड़कों पर जीवन बिताने के लिए विवश है, इस भयानक हड्डियों को कंपा देने वाली शिशिर ऋतु में जब दिल्ली शीत लहर की चपेट में है, हम घरों में रहने वाले लोग भी ठिठुर रहे हैं, तब वे लोग न्यूनतम आवश्यकताओं से वंचित अपने घरों से दूर बैठे हैं, 'स्वच्छता मिशन-स्वच्छता मिशन' चिल्लाने वाले राजा को इस बात की कोई परवाह नहीं कि हजारों से लाखों की संख्या में इन लोगों की शौच निवृत्ति की क्या व्यवस्था है? नहाने-धोने के लिए पानी कहां से आ रहा होगा? सभी के लिए भोजन की व्यवस्था हो भी पा रही है या कि नहीं? ट्रैक्टर ट्रोलियों में इस भयानक सर्द जाड़े की रातों में लोगों की सोने की व्यवस्था कैसे हो रही होगी? यह सब विचारे भी तो कौन? राजा महाराज लोग तो एक और राज्य (बंगाल) को प्राप्त कर अपनी राजसत्ता का रिकार्ड बनाना चाहते हैं, उसकी योजना में लगे हैं, एक ओर जहां सारे देश कि लिए पर्याप्त गेंहू, चावल, गन्ना आदि उगाने वाले सहस्रों-लाखों किसान अपनी फसल बोकर सड़कों पर हैं, तो वहीं दूसरी ओर राजा महाराज बंगाल के न्यून आय वर्ग वाले किसानों से एक-एक मुठ्ठी चावल मांगकर वोटों की फसल काटने का जुगाड़ कर रहे हैं राजा महाराज के परिक्रमा परायण लोग 47 दिनों से 'शान्ति पूर्वक' चलाए जा रहे आन्दोलन को कभी आतंकवादी, कभी खालिस्तानी, कभी टुकड़े-टुकड़े गैंग, कभी कम्युनिष्ट, कभी कांग्रेसी, कभी मात्र पंजाबी कह कर बदनाम करने, अपमानित करने के षड्यन्त्रकारी कुत्सित घिनौने प्रयासों के साथ इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं सोसियल मीडिया पर लगे हुए हैं, यह ठीक है कि सिन्धु बार्डर पर कुछ भण्डारों की व्यवस्था है, कुछ सम्पन्न लोग भी अपने संसाधनों के साथ हैं, लेकिन जो और टीकरी बार्डर, गाजीपुर बार्डर, शहजहांपुर बार्डर आदि स्थान हैं, वहां तो गांवो के किसानों की ही हिम्मत है, जो न्यूनतम आवश्यकताओं के अभाव में भी जमे हुए हैं। जबकि अब तक लगभग साठ किसानों की असामयिक मृत्यु हो चुकी है, जिनमें वरिष्ठ किसानों के साथ युवा किसान भी सम्मिलित हैं, आखिर इसकी जिम्मेदारी किसकी है? राजा महाराज के दरबार में नौ बार तारीखें लग चुकी हैं, फिर भी 'तारीख पर तारीख और तारीख पर तारीख'' की कटाक्षपूर्ण कहावत के अतिरिक्त अब तक किसानों को कुछ नहीं मिला है और मिला भी है तो मन्त्रियों एवं नेताओं के उत्तेजना पूर्ण वक्तव्य। माननीय वाणिज्य एवं रेल मन्त्री पीयूष गोयल जी कहते हैं कि हमने चालीस यूनियन लीडरों की कुण्डलियां खंगाली हुई हैं, मुंह मत खुलवाइए, हरियाणा के माननीय मुख्यमन्त्री श्री मनोहर लाल खट्टर कहते हैं- दिल्ली में तमाशा चल रहा है, माननीय कृषिमन्त्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर कहते हैं- आज भेंट अच्छी रही, हल कुछ नहीं निकला, अगली तारीख किसानों एवं सरकार की सहमति से निश्चित हो गयी है, आशा है हल निकल आएगा, किन्तु हल कुछ नहीं निकल पाया है। दिल्ली के मा. मुख्यमन्त्री, मात्र दिखावे के लिए कुछ करते हैं, वास्तव में किसानों से सहानुभूति किसी को नहीं है, यदि सच्ची सहानुभूति होती तो कुछ विपक्ष के नेता भी किसानों के साथ टैण्टों में रात बिताते किन्तु दिखावे के लिए एवं अपनी सत्ता प्राप्ति के लिए ही इनका समर्थन है। पुनरपि, अन्य कोई कुछ भी करे उत्तरदायित्व केन्द्र में राजसत्ता पर आसीन सरकार का है कि वह अपनी प्रजा को प्रजा माने, यह समझ ले कि पंजाब भी हमारे ही देश का राज्य है, पंजाब का किसान भी देश का ही किसान है, जितना प्यार आप बंगाल के किसान से दिखा रहे हैं, उतना ही प्रेम इन अपने द्वार पर बैठे हुए किसानों से भी कीजिए! वह किसान चाहे पंजाब को हो, हरियाणा का हो, उत्तर प्रदेश का, राजस्थान का या कि अन्य किसी भी प्रदेश का किसान सभी आपकी प्रजा है और आप देश के राजा हो। किसानों के साथ न्याय करना आपका अर्थात् केन्द्र सरकार पूर्ण उत्तरदायित्व है। जिससे किसी भी बहाने से छूट नहीं मिल सकती है। अन्यथा जनता का आक्रोश किसी को भी बख्शता नहीं है। सरकार को अपनी जनता पर दया दिखानी ही चाहिये अन्यथा किसान के साथ-साथ कब सामान्य जनता भी आन्दोलन में कूद पडे, तक क्या होगा?

-आचार्य हनुमत् प्रसाद, अध्यक्ष, आर्य महासंघ।

31 दिसम्बर - 28 जनवरी-2021 **पौष** ऋतु- शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
सुभाष जयन्ती 23 जनवरी			पुनर्वसु कृष्ण प्रतिपदा 31 दिसम्बर	पुष्य कृष्ण द्वितीया 1 जनवरी	आश्लेषा कृष्ण तृतीया 2 जनवरी	मघा कृष्ण चतुर्थी 3 जनवरी
पू॰ फाल्गुनी कृष्ण पंचमी /षष्ठी 4 जनवरी	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण सप्तमी 5 जनवरी	हस्त कृष्ण अष्टमी 6 जनवरी	चित्रा कृष्ण नवमी 7 जनवरी	स्वाति कृष्ण दशमी 8 जनवरी	विशाखा कृष्ण एकादशी 9 जनवरी	अनुराधा कृष्ण द्वादशी 10 जनवरी
ज्येष्ठा कृष्ण त्रयोदशी 11 जनवरी	मूल/पूर्वाषाढ़ा कृष्ण चतुर्दशी 12 जनवरी	उत्तराषाढ़ा कृष्ण अमावस्या 13 जनवरी	श्रवण शुक्ल प्रतिपदा 14 जनवरी	धनिष्ठा शुक्ल द्वितीया 15 जनवरी	शतभिषा शुक्ल तृतीया 16 जनवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल चतुर्थी 17 जनवरी
पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल पंचमी 18 जनवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल षष्ठी 19 जनवरी	रेवती शुक्ल सप्तमी 20 जनवरी	अश्विनी शुक्ल अष्टमी 21 जनवरी	भरणी शुक्ल नवमी 22 जनवरी	कृत्तिका शुक्ल दशमी 23 जनवरी	रोहिणी शुक्ल एकादशी 24 जनवरी
मृगशिरा शुक्ल द्वादशी 25 जनवरी	आर्द्रा शुक्ल त्रयोदशी 26 जनवरी	पुनर्वसु शुक्ल चतुर्दशी 27 जनवरी	पुष्य शुक्ल पूर्णिमा 28 जनवरी			स्वतंत्रता दिवस 26 जनवरी

29 जनवरी - 27 फरवरी-2021 **माघ** ऋतु- शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
				आश्लेषा कृष्ण प्रतिपदा 29 जनवरी	मघा कृष्ण द्वितीया 30 जनवरी	पू॰ फाल्गुनी कृष्ण तृतीया 31 जनवरी
उ॰ फाल्गुनी कृष्ण चतुर्थी 1 फरवरी	हस्त कृष्ण पंचमी 2 फरवरी	चित्रा कृष्ण षष्ठी 3 फरवरी	स्वाति कृष्ण सप्तमी 4 फरवरी	विशाखा कृष्ण अष्टमी 5 फरवरी	अनुराधा कृष्ण नवमी/ दशमी 6 फरवरी	ज्येष्ठा एकादशी 7 फरवरी
मूल कृष्ण द्वादशी 8 फरवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण त्रयोदशी 9 फरवरी	उत्तराषाढ़ा कृष्ण चतुर्दशी 10 फरवरी	श्रवण कृष्ण अमावस्या 11 फरवरी	धनिष्ठा शुक्ल प्रतिपदा 12 फरवरी	शतभिषा शुक्ल द्वितीया 13 फरवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल तृतीया 14 फरवरी
उत्तराभाद्रपदा शुक्ल चतुर्थी 15 फरवरी	रेवती शुक्ल पंचमी 16 फरवरी	अश्विनी शुक्ल षष्ठी 17 फरवरी	भरणी शुक्ल षष्ठी 18 फरवरी	कृत्तिका शुक्ल सप्तमी 19 फरवरी	रोहिणी शुक्ल अष्टमी 20 फरवरी	रोहिणी शुक्ल नवमी 21 फरवरी
मृगशिरा शुक्ल दशमी 22 फरवरी	आर्द्रा शुक्ल एकादशी 23 फरवरी	पुनर्वसु शुक्ल द्वादशी 24 फरवरी	पुष्य शुक्ल त्रयोदशी 25 फरवरी	आश्लेषा शुक्ल चतुर्दशी 26 फरवरी	मघा शुक्ल पूर्णिमा 27 फरवरी	

वर्ण व्यवस्थाः डॉ. अम्बेडकर बनाम वैदिक मत-७

-सोनू आर्य, हरसौला

दूसरा कारण अयोग्यता भी है। वैदिक संस्कृत लौकिक संस्कृत से भिन्न मानी जाती है। अत: वेदमन्त्रों के अर्थ समझने के लिए अष्टाध्यायी, महाभाष्य व निरुक्त का अध्ययन आवश्यक माना जाता है। इनके अध्ययन के बिना वेदमन्त्रों के आए शब्दों का लौकिक अर्थ जैसा कि सायण, महिधर व मैक्स-मूलर ने लिखा है, ले लिया जाता है, जो कि अर्थ के अनर्थ का कारण सिद्ध होता है। महर्षि दयानन्द ने अपने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में सायण, महीधर आदि द्वारा लिए गए लौकिक अर्थ जिससे अर्थ का अनर्थ हुआ तथा स्वयं के लिए हुए प्रकरण संगत अर्थ जिससे वास्तविक अर्थ ग्रहण हुआ है वा अन्तर तथा वर्णन किया है। अब इन्हीं सायणादि के वेद भाष्यों के आधार पर पश्चिमी विद्वानों ने गलत अर्थ लेकर तथा गलत उद्देश्यों को जानना भी अत्यावश्यक है। सर्वप्रथम उनकी योग्यता का विचार करते हैं। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश पेज 276 पर मैक्समूलर के बारे में लिखते है। ''मैक्समूलर साहब के संस्कृत साहित्य और थोड़ी सी वेद की व्याख्या देखकर मुझको विदित होता है कि मैक्समूलर साहब ने इधर उधर आर्यावर्त्तीय लोगों की की हुई टीका देखकर कुछ-कुछ यथा-तथा लिखा है .... इतने से जान लिजिए कि जर्मनी देश और मैक्समूलर साहब में संस्कृत विद्या का कितना पाण्डित्य है जर्मन दार्शनिक शोपेनहर लिखता है- **(Our Sanskrit scholar do not understand their text much better than the higher class boys of Greek or Latin)** अर्थ:- हमारे संस्कृत विद्वान् उनके संस्कृत ग्रन्थों को इससे ज्यादा नहीं जानते जितने कि हमारे हायरसैकेन्ड्री कक्ष के विद्यार्थी लेटिन अथवा ग्रीक भाषा को जानते है।''

शूद्र कौन में डॉ. अम्बेडकर मैक्समूलर को उद्धृत करते हैं ''मैक्समूलर कहते हैं- संस्कृत ग्रन्थों को स्पष्ट न समझ पाने को स्वयं मैक्समूलर स्वीकार करते हैं। ये व्याख्याएँ इतनी दक्षतापूर्ण हैं कि ब्राह्मण साहित्यकारों का शब्द चातुर्थ वास्तविक अर्थ को प्रकट नहीं कर पाता। हम यह तो भली भान्ति जानते ही हैं कि अल्पशिक्षित व्यक्ति शब्दार्थ पर आधारित किसी भी सिद्धान्त को स्वीकार कर लेते हैं। आरण्यकों के अनेकों सिद्धान्त शब्दार्थों पर आधारित हैं जिनका सत्यार्थ प्रकाश शब्दार्थ की जादूगरी में स्पष्ट नहीं हो पाता।''

अत: पाणिनीय व्याकरण आदि के अध्ययन के बिना वेदादि के निहितार्थ को न समझ पाने की अधिकतर भारतीय भाष्यकारों तथा पाश्चात्य भाष्यकारों की अयोग्यता स्पष्ट हो जाती है। न केवल अयोग्यता बल्कि भाष्यकारों की मानसिकता को जानना भी अत्यावश्यक है। भारतीय भाष्यकारों का स्वार्थ ऊपर लिख चुके हैं तथा पाश्चात्य मुख्यत: मैक्समूलर की संस्कृत ग्रन्थों के भाष्य की क्या मन्सा थी इस पर विचार आवश्यक है। वैदिक साहिय को भ्रष्ट करने के लिए बोडन नामक एक व्यक्ति ने 15 अगस्त 1811 को ऑक्सफोर्ड वि. वि. में पुष्कल धनराशि दी। वि.वि में यह काम मोनियर विलियम को सौपा गया। उनके अनुसार बोडन ट्रस्ट का उद्देश्य इस प्रकार था कि ''भारत की संस्कृत पुस्तकों का अनुवाद करके देशवासियों को इस योग्य बनाया जाए कि वे संस्कृत ग्रन्थों को जानकर भारतीय जातियों का धर्म परिवर्तन करके ईसाई बनाए।''

शिक्षक वर्ग अध्यापन काल में ही छात्रों को संस्कृत साहित्य के साथ-साथ ऐसी शिक्षा भी देते गए कि जिससे वे भारत में जाकर हिन्दुओं के मनों को कलुषित कर सकें। इसी कार्य को आगे जारी रखने के लिए मैकाले ने मोक्ष-मुल्लार को नियुक्त किया। मैकाले की मानसिकता का पता उनके द्वारा उनके पिता को लिखे पत्र से चलता है।

''मेरे प्यारे पिता। हमारे अंग्रेजी स्कूल बड़ी शीघ्रता से उन्नति कर रहे हैं। इस अंग्रेजी शिक्षा का हिन्दुओं पर बड़ा लाभकारी प्रभाव हुआ है, कोई भी हिन्दू जिसने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की है, अपने धर्म के प्रति श्रद्धावान नहीं रहेगा। कईयों ने तो इस शिक्षा से ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया है। यदि यह शिक्षा प्रचलित रही तो अब से 30 वर्ष के भीतर-भीतर कोई भी उच्च-जाति का हिन्दू बंगाल में मूर्तिपूजक नहीं रहेगा। इस प्रकार बिना किसी यत्न के ओर इनके धर्म में बाधा डाले बिना, ये स्वयमेव ईसाईयत की ओर प्रवृत हो जायेंगे। इस प्रकार की उन्नति से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। इसी प्रकार मौक्ष-मुल्लर की मन्शा का पता उनके द्वारा उनकी पत्नी को लिखे हुए पत्र से चलता है।

''मुझे आशा है कि मैं इस काम को पूरा कर दूंगा और मुझे निश्चय है कि यद्यपि मैं उसे देखने के लिए जीवित न रहूंगा तो भी मेरे ऋग्वेद का यह संस्करण और वेद का अनुवाद भारत के भाग्य और लाखों भारतीयों की आत्माओं के विकास पर प्रभाव डालने वाला होगा। यह (वेद) उनके धर्म का मूल है और मूल को उन्हें दिखा देना जो कुछ उससे पिछले तीन हजार वर्षों में निकला है, उसको मूल सहित उखाड़ फैंकने का सबसे उत्तम तरीका है।''

स्पष्ट है पाश्चात्य विद्वानों की अयोग्यता के साथ- उनकी संस्कृत ग्रन्थों के भाष्यों को रचने की मन्सा भी सही नहीं थी।

निश्चित है कि विकृतिकरण का यह कार्य डॉ. आम्बेडकर से पूर्व ही लगभग लगभग हो चुका था। इसलिए उन्होंने अपनी पुस्तकों में कई जगह विकृतिकरण को स्वीकार भी किया है। उन्होंने पुरुषसूक्त (वैदिक धर्मीयों के अनुसार विकृतिकरण सम्भव नहीं क्योंकि उन्हें सुरक्षित रखने की विशेष विधियाँ है), धर्मसूत्रों एवं महाभारत में भी प्रक्षेपों को स्वीकार किया है।

क्रमश ....

संध्या काल

पौष-मास, शिशिर-ऋतु, कलि-5121, वि. 2077
(31 दिसम्बर 2020 से 28 जनवरी 2021)
प्रात: काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 A.M.)
सांय काल: 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 P.M.)

माघ-मास, शिशिर-ऋतु, कलि-5121, वि. 2077
(29 जनवरी 2021 से 27 फरवरी 2021)
प्रात: काल: 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)

सहज सरल सांख्य-८

- आचार्य सतीश, दिल्ली

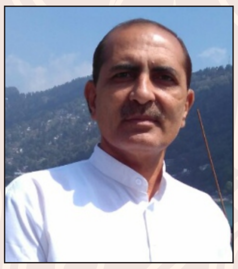

आत्मा नित्य और चेतन है। यह सिद्ध हो जाने के बाद निश्चय करते हैं कि आत्मा एक है वा अनेक?

लोक में विविधता देखी जाती है- एक जन्मता है, एक मरता है, एक सुखी है, एक दुःखी है। यदि एक ही आत्मा सब में हो तो यह सब एक साथ सुखी-दुःखी हों। फलतः जन्म-मरण आदि की विविधता के आधार पर आत्मा का बहुत्व सिद्ध होता है।

तो फिर प्रत्येक नए शरीर के साथ नया आत्मा क्यों नहीं मान लिया जाय?

आत्मा नित्य तथा अपरिणामी है। उत्पाद-विनाश वाली होने के कारण देह का नाश होता है। आत्मा देह को छोड़ जाता है। इस प्रकार एक आत्मा का नाना शरीरों के साथ सम्बन्ध होता है- जैसे एक जगह पर घट आकाश में व्याप्त है। उसके नष्ट हो जाने पर दूसरा घट उसका स्थान ले लेता है।

और इसी आधार पर शुभ-अशुभ कर्मफलों तथा बन्ध-मोक्ष की व्यवस्था का उपपादन किया जा सकता है। और इसमें जो भेद देखा जाता है, वह अन्तःकरण आदि के कारण है आत्मा के नहीं।

जब शरीरों के बदलते रहने पर आत्मा एक बना रहता है तो वर्त्तमान में अनेक देहों में एक ही आत्मा मान लेने में क्या हानि है?

अनेक अथवा समस्त देहों में एक आत्मा मानने पर समस्त विरोधी घटनाओं जैसे सुख-दुःख, जन्म-मरण का अभाव हो जाना चाहिए, लेकिन ऐसा सम्भव नहीं। इसलिए समस्त देहों में एक आत्मा का माना जाना असंगत है। एक देह-एक आत्मा होने पर विरोध प्रतीतिमूलक कोई दोष भी नहीं आ पाता।

लेकिन फिर शंका उठती है कि मरना-जीना, सुख-दुःख, बन्ध-मोक्ष आदि सब अन्तःकरण में ही होते हैं और आत्मा में उसका आरोप कर लिया जाता है तो एक आत्मा और नाना अन्तःकरण मानने में क्या हानि है?

यदि आत्मा उससे प्रभावित हो तो विभिन्न अन्तःकरणों के अनुसार एक ही आत्मा को सुखी-दुःखी, बन्ध-मुक्त क्या माना जाए और यदि प्रभावित ही न हो तो उसका अस्तित्व ही किस लिए? लेकिन यदि सुख-दुख के अन्तःकरणों के लिए उसका अस्तित्व उपेक्षित है तो वह केवल साधन मात्र रह जाता है। 'बुद्धि आदि हमारा प्राकृतिक पदार्थ परार्थ के लिए है।' यह सिद्धान्त नष्ट हो जाता है। अतः एक शरीर एक आत्मा और एक आत्मा नाना शरीरों में आवागमन ही सम्भव है।

फिर श्रुति में आत्मा की एकता का क्या?

श्रुति जाति के आधार पर एकत्व की बात करती है। जाति एक- आत्माएँ अनेक। वैसे भी जाति एक ही नहीं अनेकों की ही होती है।

विवेकी पुरुषों ने भी उसे अनेक कहा है। जो कहो कि सामान्य पुरुष ऐसा नहीं मानते तो यही कहेंगे कि जैसे अन्धा व्यक्ति आँख रूपी साधन के अभाव में रूप को नहीं देख सकता, वैसे सामान्यजन विवेकरूपी साधन के अभाव में नहीं मान सकता और उसका कथन मान्य नहीं।

'बहुत पुरुष मुक्त हुए हैं' यह भी आत्मा के बहुत्व को ही बताता है, यदि आत्मा एक ही होता तो या तो सब मुक्त होते या सब बन्धन में होते।

और यदि कहो कि न कोई मुक्त हुआ है, न कोई मुक्त होगा, क्योंकि संसार तो चल रहा है। तो फिर शास्त्र का उपदेश ही निरर्थक हो जावे।

फिर प्रश्न उठता है कि या तो संसार का उच्छेद हो चुका होता या सबके मुक्त होने से एक दिन संसार का उच्छेद क्यों न हो जावेगा?

क्योंकि अनादि काल से यह संसार सर्ग व प्रलय रूप में चल रहा है तो भविष्य में भी चलता रहेगा, उच्छेद कभी नहीं होगा। वैसे भी इससे तो यही मान्य होता है कि अत्यन्त बन्धनाश अर्थात् पुरुष का ब्रह्म में लय नहीं होता।

वैसे भी सत् से असत् और असत् से सत् नहीं होता। संसार अनादि काल से वर्तमान है अतः उसका सत् होना निश्चित है, फिर उसका असत् अर्थात् अत्यन्त उच्छेद कैसे होगा?

पुरुष मुक्तत्व-बन्धत्व दोनों रूपों से पृथक है। अतः उसका परममोक्ष नहीं, सब पुरुषों के क्रमशः मुक्त हो जाने से संसार के उच्छेद का प्रसंग नहीं आता।

पुरुष और प्रकृति का सम्बन्ध कैसा है?

पुरुष अथवा जीव व प्रकृति का साक्षात् सम्बन्ध है, अतः पुरुष साक्षी है और प्रकृति से सदा पृथक है। बन्ध में रहते हुए भी वह प्रकृति से पृथक रूप है। आत्मा या जीव या पुरुष प्रकृति से नित्य ही सदा पृथक है उसके सम्पर्क में रहता हुआ भी। वह उदासीन भी है, अपरिणामी है।

वह उदासीन भी है तो कर्त्तव्य भाव दिखता है तो चेतन के सानिध्य से। क्योंकि बुद्धिगत समस्त प्रवृत्तियों की प्रेरणा आत्म चैतन्य से प्राप्त होती है। लेकिन आत्मा दृष्टा तथा अधिष्ठाता होने से कर्तत्य है। चित्त के सानिध्य व उपरागात् होने के कारण से पुरुष उसका कर्त्ता है।

प्रथम अध्याय समाप्त।

क्रमश ....

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	13 जनवरी	दिन-बुधवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-उत्तराषाढ़ा
पूर्णिमा	28 जनवरी	दिन-गुरुवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-पुष्य
अमावस्या	11 फरवरी	दिन-गुरुवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-श्रवण
पूर्णिमा	27 फरवरी	दिन-शनिवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-मघा

गृहस्थ सम्बन्ध : भाग-१८

- आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर

गृहस्थों का कर्तव्य है कि वे इहलौकिक व पारलौकिक सुख को संरक्षित ही नहीं करें वरन बढाते भी रहें। मनुष्य को किसी भी प्रकार के सुख के लिए प्रयत्न तो करना ही होता है। क्योंकि उद्यम ही कार्य सिद्धि का उपाय है किसी नीतिकार ने ठीक ही कहा है कि-उद्यमेन ही सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथै:।

न हिसुप्तस्य सिंहस्य प्रविश्यन्ति मुखे मृगा:।।

अर्थात् मात्र बडे-बडे मनोरथ बनाने मात्र से ही कार्य सिद्ध नहीं होते एक सामान्य जन से लेकर एक राजा तक सभी को प्रयत्न करना ही होता है। वह प्रयत्न कैसे और किन सावधानियों के साथ किया जावे उसी का ईश्वरीय निर्देश ऋषि दयानन्द ने हमें सौंपा है-

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्राह्मण वित्त ऋते श्रिता:।।
सत्येनावृता: श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता:।।
स्वधया परिहिता: श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया गुप्ता।
यज्ञे प्रतिष्ठिता लोको निधनम्।। अथर्ववेद।

ऋषि दयानन्द कृत अर्थ:- हे स्त्री पुरुषों/ मैं ईश्वर तुमको आज्ञा देता हूँ कि तुम सब गृहस्थ मनुष्य लोग परिश्रम तथा प्राणायाम से संयुक्त, वेदविद्या, परमात्मा और धनादि से भोगने योग्य धनादि के प्रयत्न में और यथार्थ पक्षपातरहित न्यायरूप धर्म में चलनेहारे सदा बने रहो।

(सत्येनावृता:) सत्यभाषणादि कर्मों से चारों ओर से युक्त, शोभा तथा लक्ष्मी से युक्त, कीर्ती और धन से सब ओर से संयुक्त रहा करो।

(स्वधया)अपने ही अन्नादि पदार्थ के धारण से सब के हितकारी सत्यधारण में श्रद्धा से सब ओर से सब को सत्याचरण प्राप्त कराने हारे नाना प्रकार के ब्रह्मचर्य सत्यभाषणादि व्रत धारण से सुरक्षित, विद्वानों के सत्कार शिल्प विद्या और शुभगुणों के दान में प्रतिष्ठा को प्राप्त हुआ करो। और इन्हीं कर्मों से इस मनुष्यलोक को प्राप्त होके मृत्युपर्यन्त सदा आनन्द में रहो।

श्रमेण तपसा से जो निर्देश किया गया है इसमे एक तो सीधा निर्देश है कि यथार्थ पक्षपात रहित न्यायरूप धर्म में चलना है। दूसरा यह कि वेदविद्या परमात्मा और धनादि से भोगन योग्य धनादि के लिए प्रयत्न करन है। तीसरी बात यह कि परिश्रम तथा प्रणायाम से संयुक्त रहना है। समझ में आना चाहिए। कि दोनों अर्थात् इहलोक और परलोक दोनों को सम्भालने का निर्देश एक साथ किया जा रहा है जहाँ परिश्रम सांसारिक सुख के लिए किया जाने वाला तप है वहीं प्राणायाम उपासनादि के लिए किया जाने वाला तप है जहाँ परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयत्न करना है वहीं धनादि सांसारिक पदार्थ भी प्राप्त करने हैं।

सत्येन आवृता से भी शोभा, लक्ष्मी, कीर्ती और धन प्राप्त करने की प्रेरणा दी है तो साधन सत्यभाषणादि कर्मों अर्थात् तप को ही कहा है शोभा, वह सामग्री स्थिति अथवा कर्म है जो दूसरों को अच्छे लगें। इनसे ही मनुष्य सामाजिक प्रतिष्ठा को प्राप्त होकर कीर्ति का भाजन बनता है लक्ष्मी उत्तम धन है। धन और कीर्ति से सब और से ढके रहने की अनुशंसा है। धन और कीर्ति का परस्पर सम्बन्ध भी है। सामान्यतया लोक में दो प्रकार के नीति वाक्य नीतिकारों द्वारा कहे गये हैं- एक वे जो धन को अधन मानते है। दूसरे वे जो धन को आवश्यक मानते है- यथा-

अधमा धनमिच्छान्ति धनं मानं च मध्यमा:। उत्तमा मानमिच्छन्ति मनो हि महतां धनम्।।

और **यस्यास्ति वित्तं स नर: कुलीन: सपंडित: स श्रुतवान् गुणज्ञ:।**
स एव वक्ता स च दर्शनीय: सर्वे गुणा: काञ्चनमेवाश्रयन्ति।।

उपरोक्त दोनो ही विचार एक दूसरे के विरोधी और अतिवादि लगते हैं हालांकि इन दोनों का सामञ्जस्य इस प्रकार किया जा सकता है। धन से ही सभी गुण प्रकाशित होते हैं किन्तु साथ ही यदि कोई धन ही धन चाहता है येन केन प्रकारेण धन पाने की जो इच्छा रखता है, किसी भी मूल्य पर धन पाना चाहता है वह वास्तव में अधर्म नीच ही है मध्यम वह है जो धन और मान के बीच सन्तुलन बनाये रखता है उत्तम जन भी धन चाहता है प्राप्त भी करता है किन्तु पक्षपात रहित न्यायाचरण रूप धर्म का पालन करते हुवे। यदि इस मान को धर्म न समझा जावे तो यह बहुत छोटा हो कर उस अहं की तुष्टि के भाव में बदल जाता है जिसके न होने के कारण अनेकों मनुष्य अपने ही परिवारों को विखण्डित कर बैठते हैं, अनेंकों लोग राज्य राष्ट्र और धर्म से भी विश्वासघाती हो संगठन को अस्तवयस्त कर बर्बादी के कारण बनते हैं। हे गृहस्थों ऐसी परिस्थितियों में अत्यन्त सावधान रहने की आवश्यकता है जब आपका यह सम्मान ऋषियों के, धर्म के, राष्ट्र के या पवित्र संगठन के मार्ग की बाधा बने। ऐकिक सम्मान से सदैव सामूहिक सम्मान बडा होता है।

(स्वधया परिहिता) में चार प्रमुख सिद्धान्तों की ओर संक्षिप्त किन्तु गहरा निर्देश किया है वे चार विषय है स्वध्या, श्रद्धया, दीक्षया और यज्ञे इन सबसे युक्त होकर और इन का उपयोग करते हुवे मृत्यु पर्यन्त आनन्दित रहो ऐसा आदेश है। आओ इन चारों को समझने का प्रयत्न करते हैं। स्वधया परिहिता: अर्थात् अपने धन से अपने पदार्थो से सबका हित करना है। आप कह सकते हैं कि इसमे समझने समझाने जैसा क्या बचा है यह तो सीधा समझ में आ ही रहा है। किन्तु आर्यो एक ग्रामीण कहावत है कि **'सुघड़ भलाई ससुरा ले बैल खोल बहु का दे।'** और अनेकश: यह कहावत चरितार्थ होते दिखती है जब एक व्यक्ति अनेक से उधार लेकर या कहिये कि धन हथियाकर दूसरों को उनके उपकार के लिए दे देता है वे वापस दे दें तो ठीक यदि वापस न करें तो यह जिनसे लिया था उनका धन लौटाता भी नहीं है साथ ही अपनी त्रुटि या अपराधा भी स्वीकार नहीं करता और समाज के समक्ष भी भला बना रहता है और कहता है मैंने आपका पैसा खाया नहीं है, कई बार तो कहता है मैने तो वह धन हाथ में भी नहीं लिया गिना भी नहीं, उसी को भेजा था वह ले गया नहीं दे रहा तो मेरी क्या गलती। ऐसा करने वाले को समर्थक भी मिल जाते है, जो कहते हैं कि वह तो बड़ा अच्छा व्यक्ति है बस समझना यही है कि इस प्रकार का परहित नहीं करना है जितना हम स्वधा से कर सकें उतना ही करदें वो बहुत है और दूसरों के धन से सुघड़ बनने वाला वैदिक परम्परा में अपराधी है।

श्रद्धया पर्यूढा:- सत्यधारण में श्रद्धा से सबको सब ओर से सत्याचरण प्राप्त कराने वाले बनिये अर्थात् अपने पास श्रद्धा का होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि श्रद्धा संसारभर की शान्ति, सुख व समृद्धि और अन्तत: पारलौकिक सुख के मार्ग को प्रशस्त करती है अत: श्रद्धावान होना सौभाग्य की बात है। कृष्ण जी कहते हैं श्रद्धया सत्यं आप्यते। अर्थात् श्रद्धा ही वह मूल साधन है जिससे सत्य को प्राप्त हुआ जाता है। किसी की बात पर आँख मूँद कर विश्वास करके सिर हिलाना, गले में अनेक प्रकार की मालाएँ धारण करना, तिलक लगाना, टोपी पहनना, मूछ कटाना, दाढी बढ़ाना, क्रास पहनना, पगडी पहनना, गुरुओं अथवा संस्थाओं के नाम के लॉकेट गले मे लटकाना आदि श्रद्धा नहीं अपितु कुछ और ही है। श्रद्धा तो सत्य को धारण करने की इच्छा है। यह जिसके भीतर जितनी तीव्र जितनी गहरी हो वह उत्तना ही अधिक मूल्यवान हो उठता है। अत: ऐसी उत्तम श्रद्धा का ग्रहण करना व अपने अन्यों को भी ग्रहण कराना ताकि वह भी सत्याचरण को ग्रहण कर सकें यह है अद्‌भुत कर्तव्य जिससे वैदिक संस्कृति के लोग अद्‌भुत ज्ञानी होते थे और सत्य ही को धर्म मानते थे। वैसा ही हमें भी मानना चाहिए तभी आर्य समाज बन पायेगा। किन्तु सावधानी रहे कई बार व्यक्ति सत्यासत्य को समझ नहीं पाता और उसे ऐसा भ्रम हो जाता है कि वह सत्य और न्याय के साथ है वह उस पर अड भी जाता है पूरी दृढ़ता से सबके सामने खड़ा हो जाता है। किन्तु जब उसे पता चलता है। कि वह तो असत्य के पक्ष में खड़ा था तो बहुत लज्जित होता है और स्वयं को लुटा हुआ अनुभव करता है इससे बचने के लिए जिसे सत्य मानते हो धैर्य पूर्वक उसकी भी परीक्षा करते रहना बहुत आवश्यक है। क्रमश ....

गौकरुणानिधिः - गौ आदि पशुओं की रक्षा के लिये ऋषि का संदेश

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर गायादि पशुओं की रक्षा व उपयोगिता के लिए गौकरुणानिधि जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि ने इस पुस्तक में गायादि पशुओं के पूरे अर्थशास्त्र को, उनकी उपयोगिता को दर्शाया है तथा समीक्षा भाग में मांसाहार व मद्यपान आदि की निस्सारता व हानियों को दर्शाया है। वहीं दूसरी ओर नियमादि देकर कृषि तथा पशुओं की उन्नति का मार्ग प्रदर्शित किया है।

यहाँ प्रस्तुत है गौकरुणानिधि पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार गायादि पशुओं की रक्षा करते हैं, उनका उपयोग लेते हैं तो न केवल पूरे राष्ट्र को अपितु एक एक व्यक्ति व एक एक परिवार स्मृद्धि को प्राप्त हो सकता है। यही मार्ग हमारी आर्थिक उन्नति का मूल है तथा इसको अपनाकर हम पाप से भी बच सकते हैं।

गतांक से आगे ... ५.-जो कि यह कार्य सर्वहितकारी है, इसलिए यह सभा भूगोलस्थ मनुष्यजाति से सहायता की पूरी आशा रखती है।

६.-जो-जो सभा देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में परोपकार ही करना अभीष्ट रखती है, वह-वह इस सभा की सहायकारिणी समझी जाती है।

७.-जो-जो जन राजनीति वा प्रजा के अभीष्ट से विरुद्ध, स्वार्थी, क्रोधी और अविद्यादि दोषों से प्रमत्त होकर राजा और प्रजा के लिए अनिष्ट कर्म करे, वह-वह इस सभा का सम्बन्धी न समझा जावे।

३. उपनियम

नाम

१.-इस सभा का नाम "गोकृष्यादिरक्षिणी" है।

उद्देश्य

२.-इस सभा के उद्देश्य वे ही हैं, जो कि इसके नियमों में वर्णन किये गये हैं।

३.-जो लोग इस सभा में नाम लिखाना चाहें*, और इसके उद्देश्यानुकूल आचरण करना चाहें, वे इस सभा में प्रविष्ट हो सकते हैं। परन्तु उनकी आयु १८ वर्ष से न्यून न हो। जो लोग इस सभा में प्रविष्ट हों, वे 'गोरक्षकसभासद्' कहलाएँगे।

४.-जिन का नाम इस सभा में सदाचार से एक वर्ष रहा हो, और वे अपनी आय का शतांश या अधिक मासिक या वार्षिक इस सभा को दें, वे 'गोरक्षकसभासद्' हो सकते हैं और सम्मति देने का अधिकार केवल गोरक्षकसभासदों ही को होगा।

(अ) 'गोरक्षकसभासद्' बनने के लिए 'गोकृष्यादिरक्षिणी सभा' में वर्षभर नाम रहने का नियम किसी व्यक्ति के लिए अन्तरङ्गसभा शिथिल भी कर सकती है। इस सभा में वर्षभर रहकर गोरक्षकसभासद् बनने का नियम 'गोकृष्यादिरक्षिणी सभा' के दूसरे वर्ष से काम आवेगा।

(ब) राजा, सरदार या बड़े-बड़े साहूकार आदि को इस सभा के सभासद् बनने के लिए शंताश ही देना आवश्यक नहीं। वे एकबार वा मासिक या वार्षिक अपने उत्साह या सामर्थ्यानुसार दे सकते हैं।

(स) अन्तरङ्गसभा किसी विशेष हेतु से चन्दा न देनेवाले पुरुष को भी 'गोरक्षकसभासद्' बना सकती है।

(द) नीचे लिखी हुई विशेष दशाओं में उन सभासदों की भी, जो 'गोरक्षकसभासद्' नहीं बने, सम्मति ली जा सकती है-

(१) जब नियमों में न्यूनाधिक शोधन करना हो।

(२) जबकि विशेष अवस्था में अन्तरङ्गसभा उनकी सम्मति लेनी योग्य और आवश्यक समझे।

(३) जो इस सभा के उद्देश्य के विरुद्ध कर्म करेगा, वह न तो 'गोरक्षक' और न 'गोरक्षकसभासद्' गिना जावेगा।

(४) 'गोरक्षकसभासद्' दो प्रकार के होंगे। एक-साधारण और दूसरे-माननीय । माननीय 'गोरक्षकसभासद्' वे होंगे, जो शतांश वा १०) रुपया मासिक वा इससे अधिक देवें। अथवा एक बार २५०) रुपया दें। वा जिनको अन्तरङ्गसभा विद्या आदि श्रेष्ठ गुणों से माननीय समझे।

५.-यह सभा दो प्रकार की होगी। एक-**साधारण**, दूसरी-**अन्तरङ्ग**।

६.-साधारणसभा तीन प्रकार की होगी-१.**मासिक**, २. **षाण्मासिक** और ३. **नैमित्तिक**।

७-**मासिकसभा**-प्रतिमास एक बार हुआ करेगी, उसमें महीनेभर का आय-व्यय और सभा के कार्यकर्त्ताओं की क्रियाओं का वर्णन किया जावे जोकि कथन योग्य हो।

८-**षाण्मासिकसभा**-कार्तिक और वैशाख के अन्त में हुआ करे, उसमें आप्तोक्त विचार, मासिक सभा का कार्य, प्रत्येक प्रकार का आय-व्याय समझना और समझाना होवे।

९-**नैमित्तिक सभा**-जब कभी मन्त्री, प्रधान और अन्तरङ्गसभा आवश्यक कार्य जाने उसी समय यह सभा हो और उसमें विशेष कार्यों का प्रबन्ध होवे।

१०-**अन्तरङ्गसभा**-सभा के सब कार्यप्रबन्ध के लिए एक अन्तरङ्गसभा नियत की जावे, और इसमें तीन प्रकार के सभासद् हों-एक प्रतिनिधि, दूसरे प्रतिष्ठित और तीसरे अधिकारी।

११-प्रतिनिधि सभासद् अपने-अपने समुदाओं के प्रतिनिध होंगे और उन्हें उनके समुदाय नियत करेंगे। कोई समुदाय जब चाहे अपने प्रतिनिधि को बदल सकता है। प्रतिनिधि सभासदों के विशेष कार्य ये होंगे-

(अ) अपने-अपने समुदायों की सम्मति से अपने को विज्ञ रखना ।

' अपने-अपने समुदायों को अन्तरङ्गसभा के कार्य, जोकि प्रकट करने के योग्य हों, बतलाना।

(स) अपने-अपने समुदायों से चन्दा इकट्ठा करके कोषाध्यक्ष को देना।

१२-**प्रतिष्ठित सभासद्** विशेष गुणों के कारण प्रायः वार्षिक, नैमित्तिक और साधारण सभा में नियत किये जावें, प्रतिष्ठित सभासद् अन्तरङ्गसभा में एक तिहाई से अधिक न हों।

१३-प्रति वैशाख की सभा में अन्तरङ्गसभा के प्रतिष्ठित सभासद् और अधिकारी वार्षिक साधारण सभा में फिर से नियत किये जावें और कोई पुराना प्रतिष्ठित सभासद् और अधिकारी पुनर्वार नियुक्त हो सकता है।

क्रमश ....

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

मैंने सत्र में रहकर अपने अस्तित्व को जाना। अपने आपको अपने पूर्वजों को समझा। मैंने इस सत्र से यह अनुभव किया कि मैं अब तक अन्धकार में अपने जीवन को जी रहा था। इस सत्र को ग्रहण करने से मैंने अपने जीवन को प्रकाशमय किया है और मैं श्रेष्ठकार्य (आर्य जीवन) के लिए जीऊगां और योग सेवा या अन्य सेवा से अपने माध्यम से समय के अनुकूल ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस अन्धकार से बचाकर प्रकाशमय जीवन के लिये प्रेरित करुँगा।

मैं विद्यार्थी जीवन के साथ-साथ लोगों को योग सिखाने का भी कार्य करता हूँ मैं अपनी योग कक्षाओं में सभी में आर्य विचारों को मैं प्रेरित करूगाँ व संध्या और हवन की भी शिक्षा देकर लोगों व बच्चों को प्रेरित करुंगा।

नाम : ललित, आयु : 21 वर्ष, योग्यता : 12वीं, कार्य : छात्र, पता : होडल, पलवल, हरियाणा।

बहुत ही उत्तम अनुभव रहा, अपने वैदिक धर्म के बारे में जो ज्ञान दिया आचार्य जी ने वो अद्‌भुत था। इस सत्र का इतना प्रभाव पड़ा कि अब मैं पूरे मन से आर्य बनने के लिए तत्पर हूँ और सक्रिय रूप से कार्य करुँगा। इससे मैं और मेरा राष्ट्र दोनों उन्नत होंगे। मैंने कभी अपने धर्म का मतलब नहीं समझा था मुझे यह अवसर भी यहीं प्राप्त हुआ। एक सच्चा योद्धा बनने की राह में इस सत्र ने मेरी जो मदद की वह अनमोल है, मुझे योद्धा होने का महत्व पता चला। इसके लिए सदा मैं आचार्यों का आभारी रहूँगा।

यह मेरे जीवन के बदलाव का पहला चरण है और इससे मैं सच में बहुत खुश हूँ। ऊपर लिखी गई सारी बातें ह्रदय से लिखी गई है।

नाम : रजत गंगवार, आयु : 19 वर्ष, योग्यता : 12वीं, कार्य : छात्र, पता : बीसलपुर, आंवला, बरेली।

आचार्य अशोकपाल जी ने मुझे यह सत्र लगाने के लिए प्रेरित किया। यहाँ आकर मेरी बहुत सी शंकाओं का समाधान हुआ। हमें किस ईश्वर की उपासना करनी चाहिए और ईश्वर के गुणों का पता चला। मेरा बहुत से अंधविश्वासों से विश्वास उठा। दूसरे दिन के सत्र में ईश्वार की उपासना की विधिओं का पता चला और बहुत से आर्य सिद्धांतों से अवगत करवाया गया। राष्ट्रप्रेम की भावना को जागरूक हुई। मैं अपना अनुभव अवश्य ही अपने घर, ऑफिस में शेयर करुँगी ताकि वो भी अगले सत्र में भागी बनें।

नाम : नीरज राणा, आयु : 29 वर्ष, योग्यता : एम.एस.सी., कार्य : कर्ल्क, पता : सैक्टर-26, चण्डीगढ।

मेरा आर्य समाज के सत्र में ये पहला शिविर था। बहुत कुछ सीखने को मिला। ईश्वर क्या है? आत्मा क्या है? मनुष्य के सिद्धान्त वेद हैं। वेद के सिद्धान्तों पर चलना। श्रेष्ठ कार्य करना। सत्य को ग्रहण करना तथा असत्य को त्याग करने लिए हमेश तैयार रहना चाहिए। मैं मूर्ति पूजा में विश्वास करती थी जो मेरी अज्ञानता थी। लेकिन इस दो दिन का सत्र लगाने के बाद मेरे ज्ञान में जो परिवर्तन आया वो बहुत सही था। अंधकार में थे इतने समय से। बहुत कुछ ऐसा था जो पहली बार सुना। भगवान को सर्वत्र पाया है।

मैंने जो कुछ सीखा, समझा मैं उसको अपने परिवार, आस-पड़ोस के लोगों, साथियों को सिखाने का प्रयास करूँगी।

नाम : सोनिया देवी, आयु : 23 वर्ष, योग्यता : एम.ए., कार्य : विद्यार्थी, पता : पंचकूला, हरियाणा।

सत्र का अनुभव बहुत अच्छा रहा, धर्म का अर्थ क्या है? व आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपनाकर हमारा अपना जीवन कैसे बदल सकता है? व विभिन्न प्रकार की सामाजिक बुराईयों से हमारे समाज को कैसे मुक्त किया जा सकता है, इस विषय का ज्ञान हुआ। राष्ट्रीयता की भावना सभी में कैसे विकसित हो सके व सामाजिक समस्याओं जैसे जातिगत विभिन्नताओं से मुक्त समाज का निर्माण हो सके के विषय में ज्ञान प्राप्त हुआ। ईश्वर का सही स्वरूप क्या है? इसका भजन स्मरण कैसे किया जाए आदि के विषय में उपयोगी, रोचक व ज्ञानवर्धक जानकारी प्राप्त हुई।

इस प्रकार के अन्य अयोजनों में सहयोग रहेगा।

नाम : शेखर प्रकाश, आयु : 43 वर्ष, योग्यता : बी.एड., कार्य : अध्यापन, पता : भिवानी, हरियाणा।

मैंने दो दिन के सत्र में बहुत कुछ सीखा है। इस सत्र के माध्यम से मुझे मेरे राष्ट्र बारे में पता चला है कि मेरा मेरे राष्ट्र को ऊँचा रखने में कितना योगदान है। और मुझे मेरे कार्य ईमानदारी, सच्चाई, तन-मन-धन से करने चाहिए।

मैं अपने राष्ट्र के निर्माण मे अपना तन-मन-धन सर्वोच्च लगाने में समर्थ हूँ। मैं आर्या निर्माण में भी अपना पूरा सहयोग करुंगी और मैं एक श्रेष्ठ आर्या बनकर रहूँगी।

नाम : सुदेश कुमारी, आयु : 27 वर्ष, योग्यता : एम.ए., कार्य : अध्यापन, पता : चण्डीगढ, हरियाणा।

मैं मात्र यह कहना चाहता हूँ कि आज मैं पूर्ण हुआ। मुझे अपनी संस्कृति, धर्म महापुरुषों को जानने का पूर्ण रूप से अवसर मिला। मैंने आचार्य श्री महेश आर्य जी के सानिध्य में धर्म, राष्ट्र व ईश्वर के अस्तित्व के बारे में जानने का मौका मिला, जिससे मेरी सभी प्रकार की शंकाए भी दूर हुई। आज के अनुभव से मेरा पूरा जीवन राष्ट्र निर्माण एवं आर्यो के निर्माण में रहेगा जिससे एक सशक्त राष्ट्र 'आर्यावर्त' का निर्माण कर सकें। मुझे आशा है कि इस सत्र के द्वारा मेरा जीवन अंधकार से प्रकाश की ओर गतिमान होगा।

मैं राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा का तन, मन, धन से सहयोग करने को आतुर हूँ। 6 वर्ष पहले ही मैं अपना जीवन राष्ट्र, धर्म और समाज को समर्पित कर चुका हूँ, अत: मैं तार्किक होकर अपना जीवन वैदिक प्रवक्ता तथा समाजसेवी के रूप में सहयोगपूर्वक लगाना चाहता हूँ।

नाम : मोहित कुमार, आयु : 24 वर्ष, योग्यता : स्नातक, पता : पटौदी, गुरुग्राम, हरियाणा ।

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।